संपादकीय

श्रीलंका संकट : देश किसका और कौन देश का ?

श्रीलंका संकट से एक बार फिर यह स्पष्ट हो गया है कि 'देश किसी का नहीं होता, लोग देश के होते हैं?' लेकिन न तो सब लोग देश के होते हैं और न ही देश हर किसी के साथ ज्यादती से पेश आता है, यद्यपि न्यायपूर्ण ढंग से पेश आने पर भी कइयों को परेशानी होती है। परंतु देश किसी का या सबका कैसे हो सकता है या कैसे नहीं हो सकता, क्योंकि वह खुद में क्रियाहीन है। यों भी कोई कथन अपने-आप में पूर्ण सत्य नहीं, संदर्भ के साथ सही-गलत होता है। देश भूमि के टुकड़े में मूर्त बेशक है, पर स्वयं में गतिहीन है, उसके मूर्तमान-गतिमान रूप का प्रतिनिधित्व करते हैं - स्वतंत्र नागरिक और संप्रभु सरकार। इनमें ताकतवर रूप है सरकार का, जो स्वयं तो अमूर्त है, पर उसके मूर्तमान रूप हैं राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मंत्री व अधिकारी गण। इन्हीं लोगों के कारण देश की सीमाएँ घटती-बढ़ती हैं, शांति व्यवस्था सुनिश्चित होती है और नागरिक आत्मनिर्भर, सुरक्षित, स्वतंत्र रहते हैं।

बहरहाल, कभी सोने की कही-मानी जाने वाली श्रीलंका आज कंगाली के कछार पर पहुँच चुकी है। परिणाम यह कि भय, भूख, भ्रष्टाचार से व्याकुल होकर लोग त्राहि-त्राहि कर रहे हैं। सड़क पर उतरकर जुलूस, प्रदर्शन करते-करते लोगों ने राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री के ऑफिस-आवास पर कब्ज़ा जमा लिया। प्रधान मंत्री आवास में आग लगा दी। तोड़फोड़ के बाद राष्ट्रपति भवन में आराम फरमाने और पिकनिक मनाने लगे, हालाँकि अब परिसर को खाली करा लिया गया है। राष्ट्रपति गोटाबाया राजपक्षे येनकेनप्रकारेण देश छोड़कर भागने में सफल रहे; पहले मालदीप और बाद में सिंगापुर पहुँच गए। देशवासियों को इस्तीफे के असमंजस में रखने के पीछे एक उद्देश्य यह भी था कि त्याग-पत्र नहीं देने तक कानूनन गिरफ्तार नहीं हो सकते। राष्ट्रपति के रूप में असीमित शक्तियाँ हाथ में रहती ही हैं।

जो देश के सर्वेसर्वा थे, भाग्य विधाता थे, उनके लिए देश प्यारा नहीं रहा, रहने लायक नहीं लगता; देश उनका नहीं हो रहा, देश के वे नहीं हो रहे, भले ही वे कल को फिर दावा करें कि देश की भलाई के लिए देश छोड़ा था। नागरिकों ने ही उनका चुनाव किया था, पर चुनने का अर्थ यह नहीं कि चयित का दोष चुनने वाले का दोष बन जाए। अंशतः ऐसा माना भी जा सकता है, पर पूर्णतया नहीं। लुकाछिपी के खेल में बड़े नेताओं को देश से निकलने से रोका जाता रहा और वे छुपकर विदेश भागने को तत्पर रहे। सुप्रीम कोर्ट ने पूर्व प्रधानमंत्री महिंद्रा राजपक्षे और पूर्व वित्त मंत्री बासिल राजपक्षे के जुलाई के अंत तक देश छोड़ने पर रोक लगा दी है, न्यायालय की अनुमति के बाद ही वे बाहर जा सकेंगे। उन्हें देश की वर्तमान दुरावस्था के लिए उत्तरदायी ठहराया गया है।

श्रीलंका की आर्थिक दुरावस्था के लिए परिवारवादी राजनीति भी जिम्मेदार है। 1948 में ब्रिटेन से स्वतंत्र होने के बाद से राजशाही की तरह सत्ता में अधिकतर कुछ परिवारों का वर्चस्व रहा। वर्तमान संकट के लिए राजपक्षे परिवार पर दोष मढ़ा जा रहा है, क्योंकि लंबे समय से यह परिवार राजनीति में और बाद में शीर्ष पर विराजमान रहा है। निवर्तमान सरकार में इसी परिवार के पाँच-पाँच लोग सत्ता के शीर्ष पर रहे। स्वाभाविक है, जो लोग सत्ता में हैं, उन्हें ही उत्तरदायी ठहराया जाएगा। घोर परिवारवाद तथा असीम भ्रष्टाचार के दलदल में अधिनायकवादी राजतंत्र से भी बुरी स्थिति में लोकतांत्रिक राजनीति पहुँच गई। सांसद-नेताओं

को शराब, रेत, खनन के ठेके चाहिए। इसी प्रकार के क्षुद्र राजनीतिक स्वार्थों के मायाजाल में आर्थिक संकट को बढ़ने दिया गया, जो अंततः राजनीतिक संकट में परिवर्तित होकर विकराल हो गया। 2019 के चुनाव में एक बार फिर राजपक्षे परिवार के ही गोटाबाया राजपक्षे राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। कोरोना महामारी से श्रीलंका के पर्यटन उद्योग को भी भारी धक्का लगा। सकल घरेलू आय में पर्यटन का हिस्सा 10% से अधिक था। इससे पहले अप्रैल 2019 में गिरिजाघरों में ईस्टर के अवसर पर हुए बम विस्फोट में 263 से अधिक लोग मारे गए और सैकड़ों घायल हुए। इस घटना के बाद विदेशी पर्यटकों की संख्या में ह्रास देखा गया। पर्यटन मंदी से विदेशी मुद्रा का भंडार कम होना ही था। 2021 में आर्थिक आपात लागू होने के बावजूद स्थिति नहीं सुधरी।

इसी मई महीने में महिंद्रा राजपक्षे के समर्थक तथा विरोधियों के आपसी झगड़े में कई लोग मारे गए, 200 से अधिक घायल हुए थे। इससे पहले संपूर्ण कैबिनेट को इस्तीफा देना पड़ा था। अंततः रानिल विक्रमसिंघे प्रधानमंत्री बने। विकासशील देशों में आक्रोश को कम करने और जनता को लुभाने के लिए खैरात बाँटने के नए खेल में भ्रष्टाचार खूब चलता है। श्रीलंका में भी मुफ्तखोरी की प्रथा जोर पकड़ी, किंतु भ्रष्टाचार पर लगाम नहीं लगाया गया। करों को काफी कम कर दिया गया, जिससे आय घटी। जैविक खाद के प्रयोग को व्यापक बनाने के लिए रासायनिक उर्वरकों के आयात पर प्रतिबंध लगा दिया गया, जिसकी वजह से अनाज उत्पादन में भारी गिरावट आई, खाद्यान्न बाहर से मँगाना पड़ा, महँगाई चरम पर पहुँच गई। 2.3 करोड़ की आबादी वाले देश को खाने की आवश्यक एक-एक चीज के लिए मुहताज होना पड़ा। रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण तेल के दाम आसमान छूने लगे। जनता को खाद्यान्न के अतिरिक्त ईंधन के लिए घंटों लाइन में लगकर प्रतीक्षा करनी पड़ी। पेट्रोल-डीजल समाप्तप्राय हो गया। बिजली संयत्रों में उत्पादन गिर गया। लोगों को 15-15 घंटे बिजली कटौती का सामना करना पड़ रहा है। अस्पताल, विद्यालय, बाजार, व्यापार ठप-से हो गए। जरूरी दवाओं की कमी के कारण रोग ठीक होने की जगह बढ़ते गए। स्थिति गृहयुद्ध जैसी भयावह हो गई।

मुश्किल दौर से गुजरकर श्रीलंका 26 वर्षों के बाद सन् 2009 में लिट्टे के गृहयुद्ध से उबरा था। तब जीडीपी वृद्धि दर 9 प्रतिशत तक थी, जो 2014-15 में ही घटकर में 4 प्रतिशत हो गई। 2009 में अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से 2.2 अरब डॉलर ऋण मिला। कई योजनाओं के लिए चीन से लिए गए कर्ज चुकाने में असमर्थता भी अर्थव्यवस्था पर बड़ा दबाव सिद्ध हुआ। भारी कर्ज के कारण विदेशी मुद्रा भंडार बहुत घट गया, जिसकी वजह से आयात नहीं हो पा रहा। राजनीतिक अस्थिरता का भी कोई ठोस समाधान नहीं निकला। 2020-21 में राजकोषीय घटा 10% से अधिक था। कुल राष्ट्रीय आय से अधिक तो सरकारी खर्च है। भारत ने 1.4 अरब डॉलर से अधिक का ऋणात्मक सहयोग दिया है। श्रीलंका पर 51 अरब डॉलर से अधिक का विदेशी कर्ज है। कर्ज से तत्काल कुछ राहत भले मिले, पर पूर्णोद्दार संभव नहीं। घरेलू राजस्व को बढ़ाकर समाधान निकाला जा सकता है।

अस्तु, पूर्व प्रधान मंत्री रानिल विक्रमसिंघे को संसद द्वारा राष्ट्रपति चुन गया है। पुलिस और सैन्य बलों को उचित कार्यवाई के आदेश दिए गए हैं। प्रर्दशनकारियों से राष्ट्रपति आवास खाली करा लिया गया है। अब भी स्थिति नहीं सुधरी तो पलायन भारत की ओर तेजी से बढ़ सकता है। आशा की जानी चाहिए कि नए राष्ट्रपति के चुनाव के बाद बाहरी सहयोग और आंतरिक दृढ़ता से स्थिति ठीक होगी!